प्रेमचन्द साहित्य एवं गोमंतकीय लेखन

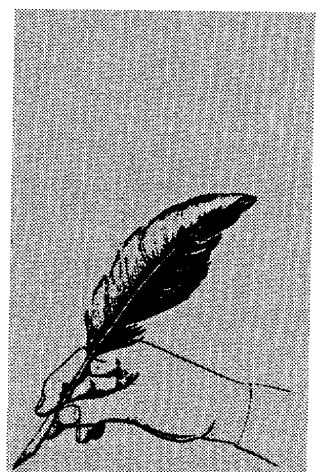

वृषाली सुभाष मांद्रेकर

इस संसार में हमारे आस-पास, हर समय कुछ न कुछ घटित होता रहता है। सामान्य रूप से हम उसको नजर अंदाज करते हैं। लेकिन संवेदनशील रचनाकार अपने आस पास की घटनाओं को न सिर्फ देखता है, अपितु उसे मानवीय सरोकारों से अभिव्यक्त भी करता है। प्रेमचन्द ऐसे ही एक सक्षम रचनाकार है, जिनसे शायद ही कोई हिन्दी ज्ञाता, प्रभावित न हुआ हो। हिन्दी में प्रेमचंद ने 'सेवासदन' से लेकर 'गोदान' तक के उपन्यासों में भारतीय जीवन का वास्तविक चित्रण किया गया है। 'सेवासद' में दहेज, अनमेल विवाह और वेश्या समस्या को, 'प्रेमाश्रय' में ग्रामीण समाज में व्याप्त दरिद्रता, जमींदारी प्रथा, गांधीवादी जीवन दर्शन, 'रंगभूमि' में भारतीय जनता के शोषण, अत्याचारी शासकवर्ग, अंग्रेजों की कूटनीति तथा सत्याग्रह आंदोलन को, 'कायाकल्प' में जन्म-मरण तथा पुनर्जन्म संबंधी विचारों को, 'निर्मला' में दहेज प्रथा तथा अनमेल विवाह को, 'गबन' में आभूषण प्रियता, नैतिक पतन को 'कर्मभूमि' में मध्यवर्ग की राजनैतिक चेतना को तथा 'गोदान' में कृषक संस्कृति, किसान जीवन के संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

प्रेमचन्द का उद्देश्य मूलत, समाजसुधार का रहा है और इसी कारण उन्होंने समाज का यथार्थपरक वर्णन करने के लिए वहाँ के परिवर्तित ग्रामजीवन के माध्यम से परिवेश एवं पात्रों की सर्जना की। कहना न होगा कि 'गोदान' का होरी, 'निर्मला' उपन्यास की निर्मला, 'कफन' कहानी के घीसू-माधव, 'पूस की रात', 'सद्गति', 'ठाकूर का कुआँ' के पात्र मूलतः सामाजिक यथार्थ एवं अंचलों की समस्याओं को चित्रित करते हैं। यही तथ्य पणीश्वरनाथ रेणु नागार्जुन, मार्कण्डेय, शिवप्रसाद सिंह, पुंडलीक नायक, महाबळेश्वर सैल, आदि के कथा साहित्य के लिए भी लागू होता है, जिनके पात्र भारतीय जन-जीवन के प्रतिनिधि पात्र हैं। विवेच्य कथाकारों के कथासाहित्य में कृषक जीवन, खेतिहर मजदूर और निम्नवर्ग के पात्रों एवं ग्राम परिवेश का प्राधान्य है। वे भारतीय मनीषा और लोकसंस्कृति के उन्नायक रचनाकार माने जा सकते हैं।

कभी इन्द्रनाथ चौधुरी ने भारतीय साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की प्रवृत्ति के सम्बन्ध में स्वीकारा है कि "भारतीय परिवेश नाना प्रांतीय, भौगोलिक, समाजिक, लोक सांस्कृतिक,

प्रांतीय भाषाओं, साहित्यों एवं साहित्यिक संस्कृतियों की क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं में संबंध्द एक खास विस्तृति का परिचय देता है। भारतीय साहित्य विचारधाराओं, प्रभावों एवं परिणामों के फल स्वरूप अपनी-अपनी साहित्यिक पहचान कायम कर लेता है। उसकी अपनी एक अनुभूति है जो हमेशा अपने सांस्कृतिक परिवेश से जुड़ी रहती है।"

'प्रेमचंद साहित्य एवं गोमंतकीय लेखन' इस विषय के दायरे में यह स्पष्ट करना चाहूँगी कि प्रेमचंद का कोंकणी लेखकों पर प्रभाव पड़ा है, एक बार लिये गये साक्षात्कार में कोंकणी के ज्येष्ठ साहित्यकार, विचारक, पत्रकार रवींद्र केळेकर ने स्वीकारा है कि वे प्रेमचंद के साहित्य से प्रभावित है। उनका वक्तव्य है - 'गोदान' जैसी कृति हमारे यहाँ आज तक नहीं लिखी गयी है। अपनी मिट्टी से जुड़े हुए लेखक के रूप में उनको देख सकते हैं। उस प्रकार के लेखक आज कम पैदा होते हैं। मैं उनकी भाषा से भी बहुत प्रभावित हूँ, सीधी बोल-चाल की भाषा जिसकी सीधा संपर्क जनमस्तिष्क से होता है।" कोंकणी के 'साहित्य अकादमी', 'कोंकणी साहित्य रत्न' पुरस्कारों से सम्मानित ज्येष्ठ लेखक विभिन्न विधाओं तथा विभिन्न भाषाओं में रचनायें कर चुके है जिनपर प्रेमचंद की तरह गांधीवाद का भी प्रभाव पड़ा। गांधीजी के विधायक कार्यों में उन्होंने काका कालेलकर जी के नेतृत्व में सहयोग किया उनका कहना है कि गांधीवाद जिस तरह से सत्य, अहिंसा, अस्तेर अपरिग्रह, संयम, शरीरश्रम, आस्वाद, सर्वधर्मसमभाव, निर्भयता, स्वदेशी, स्पर्शभावना आदि ग्यारह मूल्यों में निहित है, उन ग्यारह मूल्यों में से अगर कोई ये मूल्य अपनायें तो वह गांधीवादी है तो मैं भी गांधीवादी हूँ।" रवीन्द्र केळेकर के बहुत से निबंध है जिनपर गांधीवादी दर्शन, रवीन्द्रनाथ टागोर काका साहेब कालेलकर आदि का प्रभाव पड़ा है।

भारत विविध भाषी, विविध संस्कृतियों के मिलन से निर्मित देश है। यहाँ साहित्य विभिन्न धरातलों पर रचा गया है। साहित्य सृजन संस्कृति की आपस में टकराहट भौगौलिक विभिन्नता के कारण प्रत्येक साहित्यकृति अलग-अलग है। फिर भी हर एक कृति में मानव-मन की अभिव्यक्ति है, इस दृष्टि से रची गयी साहित्यिक कृति समान धरातल पर कुछ बीज बोती है। प्रेमचंद तथा गोमंतकीय लेखन में भारतीयता के समान तत्व मौजुद है। उसमें भारतीय संस्कृति, सभ्यता परंपरा की एक समान धारा प्रवाहित होती है। वैसे देखा जाय तो जीवन के विभिन्न रूपों का समुदाय संस्कृति है - जिसमें कभी-कभी दोष भी होते हैं, जिन्हें त्यागकर गुणों को ग्रहण कर उस संस्कृति को उत्तराधिकार में हम ग्रहण करते हैं। संस्कृति की धारा प्राचीन काल से प्रवाहित है उसके प्राणवंत तत्वों को अपनाकर हम आगे बढ़ते हैं, इसप्रकार पूर्व और नूतनता का जहाँ मेल होता है वही उच्च संस्कृति की उपजाऊ भूमि है और साहित्य के लिए यह महत्वपूर्ण तत्व है।

प्रेमचंद साहित्य तथा गोमंतकीय लेखन में बदलते परिप्रेक्ष्य में संस्कृति को अपनाकर उसके विभिन्न आयामों को खोला गया है। आचार-विचार, लोकव्यवहार, कृषक संस्कृति, रीतिरिवाज, मेल-जे, वेशभूषा, धर्म दर्शन, समाज की व्यवस्था आदि का वर्णन इस साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। प्रेमचंद के साहित्य में हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति, उनके आचार-विचार आदि का चित्रण हुआ है। वैसे तो कोंकणी कथासाहित्य में हिन्द-क्रिश्चियन संस्कृति की आपस की टकराहट, उनके संस्कार, विचारों का आदन-प्रदान मिलता है, दामोदर मावजो ने 'कार्मेलिन' उपन्यास क्रिश्चियन कम्युनिटी पर लिखा है। अनमेल विवाह, वेश्याओं की समस्यायें, दहेज प्रथा आदि का हिन्दी में बहुलता से चित्रण उनके परिवेश की उमज हो सकती है। क्योंकि इसप्रकार की समस्याओं तथा शोषण की कोंकणी कथासाहित्य में सर्जना कम हो पायी है।

अपने-अपने परिवेश तथा उसकी संस्कृति का चित्रण साहित्यकार हमेशा से करता आया है, 'समुद्रतटीय संस्कृति उनके आचार-विचार गोमंतकीय लेखन का एक प्रमुख हिस्सा है। क्योंकि समाज के विभिन्न क्षेत्रों और परिस्थितियों में साहित्यका के चेतन मन पर पड़े संस्कार ही अचेतन में संग्रहीत होते रहते हैं, और उपयुक्त समय पाकर अभिव्यक्त होते हैं। समष्टिगत चेतना की उपज होने के कारण साहित्य और समाज का संबंध बहुत ही घनिष्ठ होता है।

सामान्यतः रचनाकार जिस वर्ग, आर्थिक परिवेश या सामाजिक संरचना में जन्म लेकर विकसित होता है। उस पर उसका प्रभाव पड़ना समीचीन है। वह उन

परिस्थितियों, प्रभावों से अछूता नहीं रह सकता। इन लेखकों की जीवन संबंधी विचारधारा ही किसी कृति को श्रेष्ठ या निकृष्ठ बनाती है। हवा में महल खड़ा करने के बजाय किसी ठोस विचारधारा पर प्रेमचंद का अंतिम दौर का साहित्य और पुंडलीक नायक, महाबळेश्वर सैल आदि की रचनायें आधारति है। युगबोध और युगीन परिस्थितियों से देश में चल रही हलचलों से बिना प्रभावित हुये कोई भी लेखक साहित्यसृष्टि नहीं कर सकता। इस आधार पर अगर देखा जाय तो प्रेमचन्द, पुंडलीक नायक, महाबळेश्वर सैल आदि ने अपने उपन्यासों में युगजीवन तथा उसके संघर्षों का आकलन करने का सक्षम प्रयास किया है। उनका उद्देश्य समाज में प्रचलित मूल्यों के खोखलेपन को उघाइकर समक्ष रखना है।

स्वतंत्रतापूर्वक तथा स्वातंत्र्योत्तर परिस्थितियों से तादात्म स्थापित कर ग्रामीण प्रदेशों का यथार्थपरक चित्रण क्रमशः प्रेमचन्द तथा पुंडलीक नायक के कथासाहित्य में मिलता है। यह यथार्थबोध राजनीतिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक सम्बन्धों से जुड़ा हुआ होता है। 'गोदान' एक यर्थाथवादी कृति है, जिसे नलिन विलोचन शर्मा - संभवतः पहले आलोचक है जिन्होंने उसे पूर्णतया यथार्थवादी कृति माना था. उनके शब्दों में -'गोदान' हिन्दी की ही नहीं स्वयं प्रेमचन्द की भी अकेली औपन्यासिक कृति है जिसको उच्चावत् विराट विस्तार, निर्मम, तटस्थ यथार्थता और सरलता की पराकाष्टा तक पहुँचकर अत्यंत विशिष्ट बन गयी शैली किसी एक भारतीय उपन्यास में एकत्र नहीं मिलती। विभिन्न आलोचकों ने उनके शैली पक्ष को सराहा तो किसी ने 'गोदान' को सच्चे अर्थों में भारतीय ग्राम इकाई और नगर इकाई का महाकाव्य कहा (गंगाप्रसाद विमल) 'गोदान' में प्रेमचन्द ने अनन्त दुश्चक्र में फँसे किसान के जीवन को बाहर भीतर से देखा और उसे पूरी तन्मयता के साथ व्यक्त किया। इसीप्रकार गोवा के श्रेष्ठ लेखक महाबळेश्वर सैल ने 'काळी गंगा' में भोगे हुए यथार्थ को अभिव्यक्ति दी है। लेखक कारवार के भौगोलिक परिवेश, लोकसंस्कृति, सामाजिक जीवन का वास्तव चित्रण करता है। इस उपन्यास में कृषि जीवन को वर्ण्य-विषय के रूप में अपनाया है। भारतीय कृषक संस्कृति में भूमि और गाय का बड़ा महत्व है, साथ ही साथ कृषि संबंधी साधनों में कृषक के लिए हल तथा दो बैल आदि का होना बहुत ही महत्वपूर्ण है - गणेश के पास यह साधन तो है इसके अलावा अन्य साधनों तथा खेतीविषयक कार्यों का हल चलाना फसल काटना, फसल को धान से अलग करना (कटनी, छटनी, नडचे, नाटचे, नेर मुगळ काडचे) आदि का सूक्ष्म वर्णन लेखक ने किया है। जिससे यह महसूस होता है कि लेखक खेती-विषयक सभी कर्मों से, कारवार शिद्दर, खारगे, हुळगे आदि गाँवो के त्यौहार, रस्मों रिवाजों से भलीभाँति परिचित है। परिवेश का समुचित चित्रण वहाँ की अनुभूति, दैनिक जीवन की पूर्ण पहचान प्राकृतिक एवं स्थलों एवं स्थितियों की जानकारी तथा कारवार के प्रति उनकी रागात्मक भावनायें पूर्णतः व्यक्त हुई है।

इसप्रकार प्रेमचन्द, रेणु, पुंडलीक नायक, महाबळेश्वर सैल आदि लेखकों ने यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है वह उनकी विचारधारा से जुड़ी हुई है। वे यथार्थबोध को अपनाकर विशेष रूढी परम्परा एवं प्राचीनता के मोह से मुक्ति पाकर वर्तमान मूल्यों तथा उपलब्धियों में आस्था एवं विश्वास उत्पन्न करते हैं। इतना ही नहीं वर्तमान दौर में ग्रामीण अंचलों में ईर्ष्या-द्वेष, संकुचित स्वार्थ, कलह, मुकदमेबाजी मारपीट आदि का विघटन और विखण्डन तेजी से बढ़ता हुआ दिखाई देने लगा है जिसका वास्तविक एवं प्रसंगानुरूप चित्रण इन कथाकारों ने प्रस्तुत किया है।

विश्वस्तर पर मजदूर चेतना को विकसित करने में मार्क्सवादी चिंतन की भूमिका महत्वपूर्ण है। मार्क्स व एँगेल्स द्वारा प्रस्तुत द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, श्रमिक वर्ग, तानाशाही और वर्गहीन समाज की धारणाओं तथा लेनिनद्वारा विकसित साम्राज्यवाद की संकल्पना ने मजदूर चेतना को सुसंबध्द तथा सशक्त स्वरूप दिया। भारत में भी मजदूर वर्ग तथा उसकी चेतना को इसी से उत्तराधिकार प्राप्त हुआ। 'माँ' उपन्यास में मजदूर पॉवेल द्वारा इस चेतना को विकसित करने का कार्य गोर्कीने किया था जिसका परिणाम भारतीय साहित्यकारों पर भी पड़ा। काम के घण्टों का निर्धारण, मजदूरों में बढ़ोत्तरी, काम के लिए बेहतर सुविधाओं की माँग आदि को युनियन द्वारा व्यक्त किया गया है, भले ही पावेल उस समाजव्यवस्था का शिकार बना हो, उसे जेल भेजा गया हो फिर भी पुंजीपतियों के शोषक स्वरूप को समझते हुए मजदूरों के स्वाधिनता का संघर्ष विश्वस्तर पर उभरा हुआ था।

परिवेश भले ही अलग हो लेकिन प्रेमचन्द एवं पुण्डलीक नायक उस विद्रोह के स्वर को स्वीकार कर चूके हैं। जिसमें मनुष्य वर्तमान जीवन की विसंगतियाँ समझकर अनुरूप दिशा में मार्गक्रमण कर रहा है। यह विद्रोह प्रेमचन्द के 'गोदान' में भी दृष्टिगोचर होता है। महाजनों, जमींदारों या भाटकारों को सरकार कानुनों का भय नहीं है। ऋण किसानों की एक ऐसी समस्या है जिसमें वे दिनोंदिन पीसते जा रहे हैं। इस समस्या के प्रति विद्रोह भाव जगाकर किसानों में जागरण लाने की कोशिश 'गोदान' द्वारा हुई है। 'संसार में गऊ बनने से काम नहीं चलता। जितना दबो उतना ही लोग दबाते हैं।....चारों तरफ लूट है। ...यहाँ तो जो एक किसान है वह सबका नरम चारा है।....कभी जमींदार ने गांव पर हल के पीछे दो..दो रूपये चन्दा लगाया। किसी बड़े अफसर की दावत की थी। किसानों ने देने से इन्कार कर दिया। बस उसने सारे गांव पर जप्ती की। ...मैंने गाँव भर में ढिंढोरा पिटा कि कोई बेसी लगान न दो और न खेत छोड़ो।

...गाँव वालों ने मेरी बात मान ली, और सबने इज़ाफा देने से इन्कार कर दिया। जमींदार ने देखा सारा गाँव एक हो गया है तो लाचार हो गया। खेत बेदखल कर दे तो जोते कौन? मनुष्य में अपने अधिकारों के प्रति लड़ने की यही चेतना 'जैत' कहानी द्वरा पुंडलीक नायक भी जगाते है। युवक विजय और उसके साथी लक्ष्मीकांत भाटकार के जुल्मों का विरोध कर उसके भाट में काम न करने का निश्चय करते है। लेकिन पुंडलिक नायक श्रमिक वर्ग की मजबुरियों से भलीभाँति परिचित है, उनका यह संघर्ष ज्यादा दिनों तक नहीं चल पाता, क्योंकि उनकी आजीविका के साधन भाटकारों की मर्जीपर टिके हुए हैं इसलिए वे बहुत जल्दी हार मानते हैं। लक्ष्मीकांत भाटकार के यहाँ मजदुरों का पुनः काम पर चले जाना इस बात का द्योतक है कि मजदूर हो या किसान उसे पेट भरने के लिए जमींदारों के पांव पकड़ने पड़ते हैं। 'पूस की रात' कहानी में भी महाजन के कर्ज को चुकाने के लिए कम्बल खरीदने के लिए रखे गये तीन रूपये दे देता है और 'पूस की ठंड में बिना कम्बल के अपनी खेती की रक्षा नहीं कर पाता है। फिर भी हल्कु यह महसूस करता है कि मजदूरी करके पेट पालना बेहतर है। यह बदला हुआ नजरियाँ प्रगतिशील चेतना तथा सुधार लाने का प्रयत्न ग्रामीण समाज में बड़े पैमाने पर हुआ है। पुंडलीक नायक की कहानी 'भागेलपण' में भाटकार गोंदलो के अशिक्षित होने का फायदा उठाकर उसके बापदादाओं की जमीन हड़प लेता है। भाटकार उसे पार्टनर बनाकर उससे काम करवाता रहता है। स्वयं जब तक वह काम करता है तब तक अन्याय को सहता रहता है लेकिन पत्नी तथा अकेले बच्चे को काम पर रखने की जब बात उठती है तो वह पार्टनरशीप छोड़कर दिपु को पढ़ाने के उद्देश्य से भाट की सीमा लाँघकर दूसरी जगह चला जाता है।

पुंडलीक नायक के 'अच्छेव' उपन्यास में 'पंढरी' अपने जीवन में स्वेच्छा से औद्योगिकरण, आधुनिकता का पथ ग्रहण करता है, यह किसान पूँजीवादी व्यवस्था, औद्योगिक विकास में तुरंत काम और शीघ्र दाम की अवधारणा अपनाकर पारंपारिक कृषि व्यवसाय को त्याग देता है। गोबर भी पैसे कमाने के उद्देश्य से पारंपारिक खेतीव्यवसाय को त्यागकर लखनऊ चला जाता है। इसतरह दोनों उपन्यासों में यह दृष्टिगोचर होता है कि आधुनिकता एवं विकास के इन चिह्नों ने नीतिमत्ता, संस्कार, मानवता आदि दो दाँव पर लगाकर भविष्यगत विकास केक लिए वर्तमान जीवन शैली को खो दिया है।

अंधविश्वासों-रूढियों से प्रेमचन्द हो या रेणु हो या अन्य लेखक अभी तक अपने आपको मुक्त नहीं कर पाये है। गोवा में भी ऐसे बहुत से अंधविश्वास है, जैसे डॉक्टर सुई भोंककर जहर फैलाता है यह गळसरी के लेखक एन् शिवदास कहते हैं, तो समान अंधविश्वास रेणु भी बताते है। प्रेमचन्द की कहानियों में भी दवा दारू के बजाय वनस्पति से बनी दवायें इस्तेमाल की जाती है।

समग्ररूप से कह सकते हैं कि प्रेमचन्द जैसे सशक्त रचनाकार के प्रभाव से गोमंतकीय लेखन अछूता नहीं रहा है। प्रेमचन्द की तरह ही ग्रामीण परिवेश उनकी समस्याओं एवं लोकजीवन के विविध परिदृश्यों को गोमंतकीय लेखकों ने दर्शाया है। विभिन्न भाषा-भाषी रचनाकार होते हुए भी भारतीय संस्कृति की 'विविधता में एकता और एकता में विभिन्न लोकोत्सव, लोकजीवन, लोकेषणा के स्वरूप को चित्रित करते हैं।

* * *